'पाइलिन' से बचाव के लिए प्रभावकारी आपदा तैयारी

12 अक्टूबर, 2013 को ओडिशा और आंध्र प्रदेश के तटवर्ती क्षेत्रों में भीषण समुद्री तूफान, पाइलिन के प्रकोप से ओडिशा, आंध्र प्रदेश और अन्य क्षेत्रों में संपत्ति, खड़ी फसलों और पशुधन को व्यापक नुकसान पहुंचा। किंतु ओडीशा और आंध्र प्रदेश के तटवर्ती क्षेत्रों में लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने के लिए चलाए गए व्यापक अभियान की बदौलत जन–हानि नियंत्रित रखने में मदद मिली। प्रधानमंत्री ने सभी प्रभावित जिलों में राज्य अधिकारियों, जिला और पुलिस प्रशासन, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, राष्ट्रीय आपदा राहत बल और भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के राहत कार्मिकों और अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किए गए रोकथाम के उपायों की सराहना की। प्रधानमंत्री ने तूफान पाइलिन में मारे गए प्रत्येक व्यक्ति के निकट संबंधी को प्रधानमंत्री के राष्ट्रीय राहत कोष से दो लाख रुपये और गंभीर रूप से घायल प्रत्येक व्यक्ति को 50 हजार रुपये की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की।

आपदा बचाव से भारत की उच्च स्तरीय तैयारी और राज्य एवं केन्द्र सरकार के अधिकारियों और एजेंसियों द्वारा किए गए निवारक उपायों की बदौलत तूफान पाइलिन से मानव हानि पर नियंत्रण रख पाना संभव हो सका। मौसम विभाग ने तूफान पाइलिन की समय पर भविष्यवाणी की थी, जिसमें कहा गया था कि तूफान 12 अक्टूबर, 2013 को आंध्र प्रदेश और ओडिशा तट का पार कर जाएगा। राज्य और केन्द्र सरकार ने आपदा कार्रवाई टीमें तैनात कीं ताकि स्थिति से निपटा जा सके और राहत एवं बचाव कार्यों का अंजाम दिया जा सके।

12 अक्टूबर, 2013 से पहले प्रधानमंत्री ने स्वयं स्थिति की समीक्षा की और निर्देश दिया कि संबद्ध राज्य सरकारों को हर संभव सहायता प्रदान की जाए ताकि लोगों की सुरक्षा और संरक्षा सुनिश्चित की जा सके तथा राहत और बचाव अभियान चलाए जा सकें। भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों ने पाइलिन के प्रभाव से बचाव के लिए अपने अपने क्षेत्रों में विशेष तैयारी की। भारतीय रेलवे, भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई), विद्युत मंत्रालय स्थिति से निपटने के लिए तैयार थे और नुकसान होने की स्थिति में उनके पास आपात स्थिति में तैनात करने के लिए टीमें थीं। रक्षा संकट प्रबंधन समूह (डीसीएमजी) ने तीनों सेनाओं और तट रक्षक के संसाधन बचाव कार्यों में तैनात करने के लिए निरंतर समन्वयन किया, जिन्होंने रक्षा मंत्रालय, आंध्र प्रदेश और ओडिशा सरकारों, एनडीएमए और एनडीआरएफ के प्रतिनिधियों के साथ मिलकर काम किया।

ओडिशा में गंजम, गजपति, पुरी, जगदीशसिंहपुर, केन्द्रपाड़ा, नयागढ़ और खुर्दा नाम के सात जिलों के कलेक्टरों को आदेश दिया गया था कि वे लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने का काम शुरू करें ताकि 11 अक्टूबर, 2013 तक शत प्रतिशत लोगों को तूफान, बाढ़ बचाव केन्द्रों और सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया जा सके। ऐसे ही आदेश भद्रक और बालेश्वर जिलों में भी जारी किए गए। भोजन, पेयजल, दवाइयां और अन्य जरूरी वस्तुएं पहले से एकत्र की गयीं ताकि जरूरत पड़ने पर इस्तेमाल की जा सकें। इसी प्रकार आंध्र प्रदेश में राहत और बचाव उपकरण तैनात किए गए और राज्य के उत्तरी तटवर्ती क्षेत्रों में निचले क्षेत्रों में रहने वाले करीब 65 हजार लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया।

तूफान परवर्ती उपाय :

तूफान के बाद भारतीय वायु सेना ने चार एमआई–17 हेलीकाप्टरों के माध्यम से बैरकपुर से राहत और बचाव उड़ाने जारी रखीं। राज्य प्रशासन द्वारा उपलब्ध कराए गए करीब 15 हजार भोजन के पैकेट इन क्षेत्रों में डाले गए। बुरी तरह जलमग्न क्षेत्रों में भारतीय नौ सेना के गोताखोर एमआई–17 वी–5 हेलीकाप्टरों की अतिरिक्त उड़ानो से पहुंचाए गए। बालेश्वर और चांदीपुर के बुरी तरह प्रभावित क्षेत्रों में नौ सेना के गोताखोर हवाई मार्ग से भेजे गए। सेना ने ऐसे ही प्रयासों के लिए बालेश्वर के निकट एक दस्ता भी तैनात किया। सेना के अन्य इंजीनियरी कार्य बल ने गोपालपुर से अपनी कार्रवाई जारी रखी। यह बल राहत कार्यों के लिए चतरपुर में पिथुल गांव भी पहुंचा, जो गंजम के पश्चिम में करीब 100 किलोमीटर दूर है।

भारतीय खाद्य निगम और केन्द्रीय गोदाम निगम की टीमों ने भी ओडिशा के तूफान प्रभावित जिलों का दौरा किया ताकि वहां स्थित एफसीआई और सीडब्ल्यूसी गोदामों में रखे अनाज के भंडारों को कथित नुकसान का जायजा लिया जा सके। खाद्य और उपभोक्ता मामले मंत्रालय द्वारा तटवर्ती क्षेत्रों में स्थित गोदामों में अनाज की उपलब्धता की समीक्षा की जा रही है और ओडीशा में टीमें भेजी गयी है ताकि वे राज्य सरकार के साथ सलाल मशविरा करके अनाज की आवश्यकता मालूम कर सकें और पीडीएस के अतर्गत वितरित किए जाने के लिए तत्काल अनाज उपलब्ध करा सकें।

तूफान के प्रभाव से ओडीशा और पड़ोसी राज्यों में कई स्थानों पर तेज बारिश आई। राज्य में फसलों, संपत्ति और बुनियादी सुविधाओं को व्यापक क्षति पहुंची है। प्रभावित क्षेत्रों में जलापूर्ति और बिजली आपूति बहाल करने, क्षति का मूल्यांकन करने और प्रभावित क्षेत्रों में जन स्वास्थ्य और स्वच्छता सुविधाओं को पहुंचे नुकसान का जायजा लेने के प्रयास जारी हैं।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने बताया है कि उत्तर हिन्द महासागर (बंगाल की खाड़ी और अरब सागर) में हर वर्ष औसतन पांच (वैश्विक वार्षिक औसत 5–6 प्रतिशत) ऊष्ण कटिबंधीय तूफान आते हैं। जबकि समूचे विश्व में करीब 80 समुद्री तूफान वर्ष भर में आते हैं। अरब सागर में बंगाल की खाड़ी में इनकी आवृत्ति अधिक है, जहां तूफान का अनुपात 4 : 1 है। उत्तरी हिन्द महासागर में ऊष्ण कटिबंधीय तूफानों की मासिक आवृत्ति द्वि–मासिक मॉडल प्रदर्शित करती है जिसमें नवम्बर और मई में ज्यादा तूफान आते हैं। मई–जून और अक्टूबर–नवम्बर के महीने भीषण तीव्रता वाले तूफानों के लिए जाने जाते हैं। मानसून के महीनों (जुलाई से सितम्बर) में पैदा होने वाले ऊष्ण कठिबंधीय तूफान आम तौर पर अधिक तीव्रता के नहीं होते।

ओडिशा सुपर साइक्लोन 1999 में 29 अक्टूबर, के दिन आया था जो ओडिशा तट के निकट पारा द्वीप को पार कर गया था। उत्तरी हिन्द महासागर क्षेत्र के इतिहास में वह सबसे भीषण तूफान था। उपग्रह चित्रों के अनुसार करीब 260 किलो मीटर प्रति घंटे की रफ्तार की तेज हवाओं ने नुकसान पहुंचाया था। आंध्र प्रदेश में राज्य के तटवर्ती क्षेत्र में आए तूफानों के इतिहास में पाइलिन 74 वां तूफान था। 1891 से 2012 की अवधि में आंध्र प्रदेश में 73 तूफान आ चुके थे।

बंगाल की खाड़ी के ऊपर बनने वाले कुछ तूफान सुपर साइक्लोन की तीव्रता तक पहुंचे हैं और उन्होंने जान और माल की गंभीर क्षति पहुंचाई है। इन तूफानों की अधिकतम गति का अनुमान उपग्रह से प्राप्त चित्रों के आधार पर लगाया जाता है। बंगाल की खाड़ी में 1990 के बाद आए कुछ अधिक तीव्रता वाले तूफानों की सूची नीचे दी गयी है।

स्थान का नाम	तूफान की तारीख	अधिकतम रफ्तार से चली हवाएं (किलो मीटर प्रति घंटा) – उपग्रह से प्राप्त चित्रों के आधार पर आकलित
चटगांव	13 नवम्बर, 1970	224
चिराला, आंध्र प्रदेश	19 नवम्बर, 1977	260
रामेश्वरम	24 नवम्बर, 1978	204
श्रीहरि कोटा	14 नवम्बर, 1984	213
बांगलादेश	30 नवम्बर, 1988	213
कावली, आंध्र प्रदेश	09 नवम्बर, 1989	235
मछली पटनम, आंध्र प्रदेश	09 मई, 1990	235
चटगांव	29 अप्रैल, 1991	235
टेकनेफ (म्यांमा)	02 मई, 1994	204
टेकनेफ	19 मई, 1997	235
पारा द्वीप, ओडिशा	29 अक्टूबर, 1999	260
89.8 डिग्री ई, बांगलादेश	15 नवम्बर, 2007	220
16.0 डिग्री एन, म्यांमा	02 मई, 2008	200